प्राचीन बौद्ध स्थल का संरक्षण

प्रलिम्सि के लयि:

ASI, बौद्ध, अशोक के शलिालेख।

मेन्स के लयि:

मौर्य और सातवाहन, ब्राह्मी लपि।

चर्चा में क्यों?

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) कर्नाटक के कलबुर्गी ज़लि में कानागनहल्ली (सन्नत स्थिल का हस्सिा) के पास भीमा नदी के तट पर प्राचीन **बौद्ध** स्थल का संरक्षण करेगा।

- संरक्षण परयिोजना के तहत खुदाई में प्राप्त महा स्तूप के अवशेषों को बनिा कसिी अलंकरण के उनकी मूल स्थितिमिं पुनर्स्थापति कयिा जाएगा और साथ ही समान आकार और बनावट की नव-नरि्मति ईंटों का उपयोग करके अयाका प्लेटफॉर्मों (Ayaka Platforms) के गरि हुए हस्सिों का पुनर्नरि्माण करेगी।

उत्खनन के नष्किर्ष:

- **अशोक के शलिालेख:**
    - **अशोक के शलिालेखों** के साथ-साथ पत्थरों और गुफाओं की दीवारों पर तीस से अधकि शलिालेखों का संग्रह है, मौर्य साम्राज्य के सम्राट अशोक ने इनका नरि्माण करवाया था, जन्हिोंने 268 ईसा पूर्व से 232 ईसा पूर्व तक शासन कयिा था।
- **महा स्तूप:**
    - एक महा स्तूप की खोज की गई थी जसि शलिालेखों में अधोलोक महा चैत्य (नीदरलोक का महान स्तूप) के रूप में संदर्भति कयिा गया था और अधकि महत्त्वपूर्ण रूप से सम्राट अशोक का भत्तिचित्रि उनकी रानयिों और महलिा परचिारकों से घरिा हुआ था।
        - माना जाता है कि महा स्तूप को तीन नरि्माण चरणों में वकिसति कयिा गया था - मौर्य, प्रारंभकि सातवाहन और बाद में सातवाहन काल जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से तीसरी शताब्दी ईस्वी तक फैला हुआ था।
        - माना जाता है कि भूकंप में स्तूप नष्ट हो गया था।
    - यह अपने समय के सबसे बड़े स्तूपों में से एक है, भत्तिचित्रि को मौर्य सम्राट की एकमात्र जीवति छवि माना जाता है, जसि पर ब्राह्मी में 'राय अशोक' शलिालेख था।

अन्य प्रमुख बदुि:

- **जातक कथाओं** का मूर्तकिलात्मक प्रतपािदन।
    - जातक बौद्ध कला और साहत्यि का महत्त्वपूर्ण हस्सिा हैं।
    - वे बुद्ध (प्रबुद्ध व्यक्ति) के पछिले अस्तत्वि या जन्म का वर्णन करते हैं, जब वे मानव और गैर-मानव दोनों रूपों में बोधसित्व (ऐसे प्राणी जो अभी तक ज्ञान या मोक्ष प्राप्त नहीं कर पाए हैं) के रूप में प्रकट हुए थे।
- **सातवाहन राजशाही और अशोक द्वारा वभिन्नि भागों में भेजे गए बौद्ध मशिनरयिों के कुछ अद्वतिीय चत्रिण।**
- **वभिन्नि धर्म चक्रों से सजाए गए 72 मृदंग पट्टी (Drum-Slabs)।**
- यक्ष और सहि की मूर्तयिाँ।
    - यक्ष (पुरुष प्रकृति की आत्माएँ) **प्राकृतकि दुनयिा की पहचान हैं।**
    - समय के साथ उन्हें बौद्ध और हदिू देवताओं दोनों में सामान्य देवताओं के रूप में पूजा की जाती थी, जो अक्सर पृथ्वी के धन के संरक्षक के रूप में कार्य करते थे और वे धन से जुड़े हुए थे।
- **वभिन्नि पुरालेखीय वशिेषताओं वाले ब्राह्मी शलिालेख:**

- ब्राह्मी लिपि सबसे पुरानी लेखन प्रणालियों में से एक है, जिसका उपयोग भारतीय उपमहाद्वीप और मध्य एशिया में अंतिम शताब्दी ईसा पूर्व एवं प्रारंभिक शताब्दी के दौरान किया गया था।

सातवाहन:

- मौर्यों के **पतन के बाद दक्कन में सातवाहनों ने अपना स्वतंत्र शासन स्थापित किया। उनका शासन लगभग 450 वर्षों तक चला।**
- उन्हें **आंध्र के नाम से भी जाना जाता था।**
- **पुराण और नासिक एवं नानागढ़ शिलालेख सातवाहनों** के इतिहास के लिये महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं।
- सातवाहन वंश का संस्थापक सिमुक था। सातवाहन वंश का सबसे महान शासक गौतमीपुत्र सातकर्णी था।
- सातवाहनों ने बौद्ध धर्म और ब्राह्मणवाद को संरक्षण दिया। सातवाहनों द्वारा अश्वमेध और राजसूय यज्ञों के प्रदर्शन के साथ ब्राह्मणवाद को पुनर्जीवित किया था।
- उन्होंने **प्राकृत भाषा** और साहित्य को भी संरक्षण दिया।

स्रोत : द हिंदू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/conservation-of-ancient-buddhist-site